नक़द धर्म

एमरीका आदि की उन्नति का बड़ा कारण

———:o:———

स्वामी राम तीर्थ महाराज का व्याख्यान, जो उन्हों ने ग़ाज़ीपुर में दिया था ॥

———

"सत्यमेव जयते नानृतम्" हमारे वेद में लिखा है कि जय सत्य ही की होती है, झूठ की कभी नहीं होती। सांच को आंच नहीं, झूठ कभी फलता नहीं, संसार में जहां कहीं धन और प्रताप है धर्म ही उस का मूल कारण है, हिन्दू कहते हैं कि लक्ष्मी विष्णु की स्त्री है और वह पतिव्रता है जहां विष्णु जी (सत्य) होंगे वहीं लक्ष्मी होगी, इस को और किसी मनुष्य का लिहाज़ (पक्ष) नहीं, प्रताप भूगोल का अंश नहीं अर्थात् प्रताप किसी विशेष स्थान पर सामित्य नहीं,

जो लोग यूरुप और एमरीका आदि की उन्नति का वहां की शीत जल वायु को कारण ठहराते हैं या जो कई अन्य देशों की अधोगती को वहां की सीमा के माथे मढ़ते हैं वह भूल करते हैं। अभी दो हज़ार वर्ष नहीं हुये इंगलैंड के वासी रोमा आदि में वरदे और दास वने विकते थे आज इंगलैंड इतने वड़े देशों पर राज्य कर रहा है, क्या इंगलैंड अपनी पुरानी सीमा से भाग कर कहीं आगे निकल गया है? पांच सौ वर्ष पहिले एमरीका पृथ्वी के उसी स्थान पर था जहां आज है, परन्तु इस काल में उस के वासियों की दशा में जो भेद पड़ा है उस का आन्दोलन कीजीये, रोम, यूनान, मिसर और हमारा भारत आज वहीं तो हैं जहां उन दिनों में थे जव कि सारे जगत् में इन की विद्या और महत्त्व की धांक थी, सौभाग्य देशों और पुरुषों का लिहाज़ (पक्ष) नहीं करता, जो लोग सत्य पर चलते हैं केवल उन्हीं की जय होती है और जव तक सत्य धर्म पर चलते हैं उन की जय रहती है॥

प्रीय! क्षमा करना, राम आप का है और आप

राम के हैं, तुम हमारे हो हम तुम्हारे हैं पूरे प्रेम के साथ सन्मुख आओ, जो कुछ हम कहेंगे प्रेम से कहेंगे परन्तु खुशामद नहीं करेंगे । प्रेम यह चाहता है कि पुरुष खुशामद न करे । राम जापान में रहा, एमरीका में रहा, यूरूप के कई देश देखे पर जहां जय पाई सत्य की पाई, एमरीका जो उन्नति कर रहा है, धर्म पर चलने से कर रहा है धर्म पर किसी एक का इजारा (स्वत्व) नहीं हर जगह इस का ग्रहण कर सकते हैं ॥

धर्म दो प्रकार का है-एक नकद दूसरा उधार यह इस दृष्टांत से प्रगट होगा-एक पुरूष ने कुछ धन पृथ्वी में गाड रक्खा था, यह उस के लड़के को ज्ञात हो गया, उस ने पृथ्वी को खोद कर उस धन को निकाल लिया और व्यय कर डाला परन्तु तोल कर उतने ही तोल के पत्थर वहां गाड दिये । कुछ दिन पीछे जब पिता ने उस पृथ्वी को खोदा और धन न पाया तो रो २ कर कहने लगा हाय ! मेरा धन कहां गया, लड़के ने कहा पिता जी ! रोते क्यों हो, आप ने उस को वर्ताव में तो लाना ही नहीं था । रख छोड़ने के लिये ही था देखलो उतने ही तोल के पत्थर वहां रक्खे हैं ॥

बराए निहादन चे संगो चे ज़र (जब रख ही छोड़ने हैं तो क्या पत्थर और क्या धन, धार्मिक युद्ध और रोना धोना जो होता है वह नक़द धर्म पर नहीं होता उधार धर्म पर होता है। नक़द धर्म वह है जो मरने पश्चात् नहीं वरन विद्यमान जीवन से सम्बन्ध रखता है ॥

उधार धर्म विश्वासित होता है, नक़द धर्म निश्चित, उधार धर्म कहने के लिये और नक़द धर्म करने के लिये, वह भाग धर्म का जो नक़द है उस पर सब ही मत सहमत हैं जैसे :– सत्य बोलना, विद्या पढ़ना और उस पर चलना, स्वार्थ का त्याग, पर धन और पर दारा को देख कर न ललचाना, संसार की वासनाओं और धमकियों के जादू और डर में आकर ब्रह्म को न भूलना, दृढ़चित्त और गम्भीर रहना इत्यादि ॥

इस नक़द धर्म पर कहीं दो रायें (सम्मतियें) नहीं हो सकतीं। उधार के दावा मुद्दई पेशा लोगों को सौंप कर वर्त्तमान (नक़द धर्म) पर चलने वाले

ही यश और कीर्ति पाते हैं इस बात का ठीक निश्चय अन्य देशों में जाने से हुआ ॥

भारत और एमरीका में क्या भेद है? यहां दिन है तो वहां रात है, वहां रात है तो यहां दिन है। जिन दिनों भारत का सतारा शिखर पर था एमरीका को कोई जानता भी नहीं था आज एमरीका उन्नत है तो भारत को कोई पूछता नहीं ॥

भारत में बाज़ार आदि में रास्ता चलते बाईं ओर चलते हैं एमरीका में दाईं ओर। पूजा और सत्कार के समय यहां जूता उतारते हैं वहां टोपी, यहां घरों में राज्य पुरुषों का है वहां स्त्रियों का, इस देश में यह शिकायत है कि यहां विधवा स्त्रियां अधिक हैं उस देश में कुंआरी ही कुंआरी हैं, हम कहते हैं पुस्तक मेज़ पर है वह कहते हैं पुस्तक पर मेज़ है (दी बुक ऑन दी टेबल The book on the table)। The book ...

भारत में गधा और उल्लू मूर्खता के चिन्ह हैं उस देश में गधा और उल्लू नेकी और बुद्धिमत्ता की निशानी हैं। इस देश में जो पुस्तक लिखी जाती है यदि आधी के लगभग प्राचीन प्रमाणों से न भरी हो

तो उस का मान नहीं होता, उस देश में पुस्तक की सब बातें यदि नई न हों तो उस को कोई पूछता नहीं, यहां कोई उपयोगी बात जान पड़े तो उस को छिपा कर रखते हैं वहां यंत्रालय में छपा देते हैं. यहां मत प्रतिष्ठा अत्यन्त है वहां नकद धर्म अधिक है, हमारे यहां इस बात में बड़ाई है कि औरों से न मिलें अपने ही हाथ से रोटी पकाकर खायें और सब से पृथक रहें वहां पर जितना औरों से मिलें उतना ही मान है, यहां पर अन्य देशों की भाषा पढ़ना कुछ बुरा सा समझा जाता है (न पठेत यामनी भाषां) वहां अन्य देशों की भाषाओं से जितनी विज्ञता करो उतना ही अधिक मान होता है॥

जब राम जापान को जा रहा था तो जहाज़ पर एमरीका का एक वृद्ध अध्यापक (प्रोफैसर) मित्र बन गया, वह रूसी भाषा पढ़ रहा था, प्रश्न करने पर ज्ञात हुआ कि वह ग्यारह भाषायें पहिले भी जानता है, उस से पूछा गया कि इस अवस्था में यह नई भाषा क्यों सीखते हो, उत्तर मिला कि मैं जिओलोजी (भूगर्भ विद्या) का प्रोफैसर हूं, रूसी भाषा में इस विषय पर एक उत्तम पुस्तक लिखी गई है यदि उस का उलथा कर सकूंगा तो मेरे देश

वासियों को बहुत लाभ पहुंचेगा इस कारण रूसी भाषा पढ़ता हुं ॥

राम ने कहा अब तुम मरने के समीप हो अब क्यों पढ़ते हो अब ईश्वर की भक्ति करो। उत्तर दिया कि मनुष्यों की सेवा ही ईश्वर भक्ती है। यदि मैं काम करते २ नरक में जाऊं तो जाऊं कुच्छ परवाह नहीं, मुझे नरक के दुःख मिलते हैं तो हर्ष से स्वीकृत हैं, परंतु मेरे भाईयो को सुख मिल जाये इस जीवन में मैं देश सेवा को मौत के भय से नहीं छोड़ सकता ॥

यही नकद धर्म भगवद्गीता में भली प्रकार से कहा है ॥

कर्मण्ये वाधि कारस्ते माफलेषु कदाचन्।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ॥

काम तो करते ही जाओ परंतु फल पर दृष्टि मत रक्खो।

लार्ड मेकाले की प्रार्थना थी कि मैं मरूं तो पुस्तकालय में ही मरूं, मरूं तो यार की गली ही में मरूं।

दफन करना मुझ को कूए यार में।
कबर बुल बुल की बने गुलज़ार में॥

मरें तो धर्म पालन करते मरें, शत्रु वद्ध मरें, रण क्षेत्र में मरें. परिश्रम, आनंद और उत्साह के साथ प्राण दें।

एक माली बाग़ लगाता था किसी ने पूछा बुढ्ढे मियां! क्या करते हो? क्या तुम इस का फल खाओगे? एक पाओं तो तुम्हारा मानो पहिले ही कबर में है क्या तुम को फ़कीर की वह बात स्मरण नहीं है:—

घर बनाऊं खाक इस वहशत कदा में नासहा।
आए जब मज़दूर मुझ को गोरकन याद आगया॥

माली ने उत्तर दिया औरों ने बोया था हम ने खाया हम बोयेंगे दूसरे खायेंगे इसी प्रकार संसार का काम चलता है। जितने महा पुरुष हो गये हैं क्या उन महा पुरुषों ने उन वृक्षों का फल आप खाया था जो वह बोगये? कदापि नहीं। उन महा पुरुषों ने तो केवल अपने शरीरों को मानो खाद बना दिया। फल कहां खाय? जिन वृक्षों का फल शताब्दीयों से लोग आज तक खा रहे हैं वह उन ऋषियों की खाक से उत्पन्न हुये हैं। यही नियम धर्म का वास्तविक जीवन है यही नियम उस प्रोफ़ैसर

के अमल (व्यवहार) में पाया गया जो रूसी भाषा पढ़ता था ॥

जिस समय राम जापान से अमरीका को जाता था जहाज़ में लग भग डेढ़ सौ लड़के जापानी थे जिनमें कई धनाढ्यों के घरानों के भी थे पर उन में शायद ही कोई ऐसा था जो अपने घर से रुपैया ले कर चला हो, कई तो ऐसे थे कि जहाज़ का किराया भी उन्हों ने घर से न लिया था कई उन में से धनाढ्य यात्रियों के बूट साफ करने पर, कई जहाज़ की छत के तख्ते धोने पर और अन्य तुच्छ कामों पर नौकर होगये थे और इस प्रकार जहाज़ का खर्च चुका रहे थे। प्रश्न करने पर इन का यह विचार पाया गया कि अपनी जाति का द्रव्य अन्य देशों में जाकर क्यों खर्च करें जहाज़ का किराया भी सेवा करके देते हैं ॥

अमरीका में जाकर इन में से कई विद्यार्थी तो धनी पुरुषों के घरों में दिन भर सेवा करते थे और रात को नाइट स्कूलों (रात्रि पाठ शालाओं) में जाकर पढ़ते थे। कई रेल की सड़क पर या बाज़ारों में रोड़ी कूटने पर या अन्य किसी काम पर लग गये, यह लोग

ग्रीष्म ऋतु में मज़दूरी करते थे और शरद् ऋतु में कालिज में शिक्षा पाते थे। इसी प्रकार सात आठ वर्ष व्यतीत करके अपनी बुद्धी को एमरीका के शिल्प और विद्या से और अपनी जेबों को एमरीका के रुपया से भर कर यह जापानी अपने देश को वापिस आते हैं, प्रत्येक जहाज़ में सैकड़ों जापानी एमरीका आदि को जाते रहते हैं हज़ारों वरग लाखों जापानी प्रती वर्ष जहाज़ों में जर्मनी और एमरीका को जाकर और वहां से विद्या पाकर लौट जाते हैं इस का फल आप देख ही रहे हैं, पचास वर्ष हुये जापान हिंदुस्तान से भी पीछे था, आज यूरुप से भी बढ़ गया, तुम्हारा हाथ खूब गोरा श्वेत है और इस का लहु सर्वथा निर्मल है यादि कलाई पर पट्टी बांध दोगे तो रक्त हाथ का हाथ ही में रहेगा बाकी शरीर में नहीं जावेगा प्रत्युत गन्दा हो जायेगा और हाथ सूख जायेगा बस जिन देशों ने यह कहा कि हम खूब हैं, हम ही अच्छे हैं, हम ही बड़े हैं, हम म्लेछों या काफिरों से क्यों सम्बन्ध रक्खें और अपने आप को अलग थलग कर लिया उन्हों ने अपने आप पर मानों पट्टी बांध कर अपने तईं सुखा

लिया यह दृष्टांत प्रसिद्ध है :—बहता पानी, निर्मला खड़ा सो गन्दा हो ॥

आवे दरया बहे तो बहतर।

इन्सां रवां रहे तो बहतर ॥

यदि गूढ़ दृष्टि से देखा जाय तो ज्ञात होगा कि जिन देशों ने उन्नति की है चलते ही रहने से की है ॥ एमरीका के लोगों की दशा इस विषय में देखिये कि ४५ हज़ार एमरीकन के लगभग प्रति दिन पैरस में रहते हैं, समूहों के समूह आते हैं और जाते हैं कोई ज़रा सी आविष्कार (ईजाद) फरांस में देखी तो झट अपने देश में पहुंचादी. प्राचीन शिल्पों को सीखने में भी कोई न्यूनता नहीं, प्रति वर्ष अस्सी हज़ार के लगभग एमरीकन मिसर में आते हैं और मीनारों को देखते हैं, चालीस प्रती सैकड़ा एमरीकन सारा भूमण्डल घूम चुके हैं इसी प्रकार यह लोग जहां विद्या होता है वहां से लाकर अपने देश में पहुंचा देते हैं ॥ जर्मनी वाले भी ऐसा ही करते हैं, एमरीका से आते समय राम जर्मन जहाज़ पर सवार था, तीन सौ के लग भग पहिले दर्जो के यात्री होंगे उन में परोफैसर, कड्यू,

जैरन और व्योपारी लोग थे, दिन के समय राम प्रायः जहाज़ के ऊपरले भाग पर जाकर बैठता था, एकांत में पढ़ता लिखता था या ध्यान विचार में लग जाता था परन्तु जर्मन लोग जहाज़ की ऊपर की छत पर आकर राम को नीचे लाते थे और राम के व्याख्यान कराते थे राम को अन्य देश का समझ कर काफ़िर या म्लेच्छ सा वर्ताव तो न था यह विचार था कि जितना भी ज्ञान इस विदेशी से मिल सकता है ले लें। युनाइटेड स्टेटस एमरीका में सब से पहिले नगर जो राम ने देखा स्याटल वाशिंगटन है वहां यूनीवर्सिटी ने राम को हिंदु दर्शन शास्त्र (फ़िलोसोफी) पर व्याख्यान देने के लिये निमन्त्रण दिया, व्याख्यान के पश्चात् एक युवक प्रोफेसर से भेंट हुई जो अभी २ जर्मनी से लौट कर आया था राम ने पूछा जर्मनी क्यों गये थे उस ने कहा वनस्पति विद्या और रसायन विद्या में अपनी और वहां की यूनीवर्सिटियों का मुकाबला करने गया था और साधारणतः इस का फल यह सुनाया कि दस वर्ष हुये जर्मनी हम से बढ़ कर थी परन्तु आज हम इस से न्यून नहीं। सच है-पीर शौ व्यामोज़ (बुढ़ा हो कर

भी सीख) परीश्रम के साथ अन्य लोगों से सीख २ कर उन लोगों ने विद्या को पाया है और बढ़ाया है ॥

यह विचार ठीक नहीं कि एमरीका के लोग डालर (रूपैया) के दास हैं, वरन विद्या के पीछे डालर स्वयं आता है जो लोग एमरीका वालों पर यह दोष लगाते हैं कि इन का धर्म नकद धर्म नहीं वरन नकदी धर्म है वह या तो एमरीका की वास्तविक दशा से भिज्ञ नहीं या सर्वथा अन्याई हैं और यह वाक्य उन पर घटता है "अभी कच्चे हैं कौन दांत खट्टे करे" ॥

कैलीफोरनिया में एक स्त्री ने अठारह करोड़ रूपैया देकर एक यूनीवर्सिटी स्थापित की इसी प्रकार विद्या के बढ़ाने और फैलाने के लिये प्रति वर्ष करोड़ों को दान दिया जाता है, हिन्दुस्तान की ब्रह्म विद्या का वहां यह मान है कि वैसा वेदांत हिन्दुस्तान में आज कल नहीं है, मानों कि इन लोगों ने हमारे वेदांत को पचा लिया है और अपने शरीर और प्राणों में डाल लिया है परन्तु हिन्दू नहीं बन गये वैसे ही हम इन के शिल्प और ज्ञान को पचा कर भी अपने जाति पन को

दृढ़ रख सकते हैं । वृक्ष बाहर से खाद लेता है परन्तु स्वयं खाद नहीं होजाता, बाहर की मिट्टी, पानी, वायु और प्रकाश को खाता है और पचा लेता है परन्तु मिट्टी, पानी, वायु आदि नहीं बन जाता, जापानियों ने एमरीका और युरूप के शिल्प और विज्ञान पचा लिये परन्तु जापानी बने रहे. देवताओं ने अपने कच* को राक्षसों के हां भेज कर उन की संजीवनी विद्या सीख ली परन्तु इस से राक्षस नहीं बन गये. इसी प्रकार तुम युरूप और एमरीका जाकर इन की विद्या सीखने से अहिंदु या अहिंदुस्तानी नहीं हो सकते, जो लोग विद्या को भुगोल की सीमा मे डालते हैं ओह ! यह हमारी विद्या है वह अन्य लोगों की विद्या, अन्य लोगों की विद्या यहां आने मे पाप होगा और हाये ! हमारी विद्या और लोग क्यों ले जायँ "इस विचार वाले लोग अपने ज्ञान को अति मूर्खता में परिवर्तन करते हैं ॥ इस कमरा में प्रकाश है प्रकाश बहुत दिल पसंद और सुहावना है यदि हम कहें वह हमारा प्रकाश है हमारा है, हाय ! कहीं बाहर के प्रकाश से मिल कर अपवित्र न हो जाय ! और इस विचार से अपने प्रकाश की रक्षा के

* कच की कथा महाभारत में है ।

लिये चिकें गिरादें, परदे डाल दें, द्वार बंद करदें, खिड़-
कियां लगादें, झरोखे बंद करदें तो प्रकाश तत्काल
जाता रहेगा और अंधेरा ही अंधेरा हो जायेगा, हाय !
हम लोगों ने हिंदुस्तान में यह कुटिल नीति की चाल
क्यों स्वीकार की ?

हुब्बे वतन अज़ मुल्के सुलेमां खुश्तर ।
खारे वतन अज़ सुम्बल ओ रीहां खुश्तर ॥

देश का प्रेम सुलेमान के देश से अच्छा ।
देश का कांटा बालछड़ और न्याज़बो से अच्छा ।
कह कर आप तो कांटा होजाना और देश को कांटों
का स्थान बना देना देश भक्ती नहीं है ॥

प्रायः एक ही प्रकार के वृक्ष जब इकट्ठे सघन
झुंडों में उपजते है तो सब निर्बल रहते हैं इन में से
किसी को तनक पृथक बो दो तो बहुत पुष्ट और लम्बा
हो जाता है यही दशा जातियों की है काश्मीर के
विषय में कहते हैं ॥

अगर फिरदौस बर रूए ज़मीन अस्त ।
हमीनस्तो हमीनस्तो हमीनस्त ।

यदि इस पृथ्वी पर बैकुण्ठ है तो यहीं है यहीं है ।

परन्तु वह कश्मीरी जो अपने वैकुण्ठ Happy valley को छोड़ना पाप समझते हैं निर्धनता, कृपणता और मूर्खता में प्रसिद्ध हो रहे हैं और वह वीर काश-मीरी पंडित जो इस पर्वतीय वैकुण्ठ से बाहर निकले मानो सच मुच वैकुण्ठ में आगये उन्हों ने जहां गये बाकी हिन्दुस्तानीयों को हर बात में मात कर दिया इन में से बहुत से उच्च २ पदवियों पर सुशोभित हैं ॥

जब तक जापानी जापान में बंद रहे निर्बल और आधीन थे जब अन्य देशों में जाने लगे, बलिष्ट होगये, युरुप के कंगाल, दीन और प्रायः नीच लोग जहाजों पर चढ़ कर एमरीका जा बसे अब वह लोग जगत् की सब से बड़ी शक्ति हैं, कुच्छ हिन्दुस्तानी भी बाहर गये जब तक अपने देश में थे कुछ पूछ न थी अन्य देशों में गए तो उन बढ़ी चढ़ी जातियों में भी प्रथम श्रेणी में गिने गए और कीर्ति पाई ॥

पानी न बहे तो उस में दुर्गंध आए,
खंजर न चले तो मोर्चा खाए,
गर्दिश से बढ़ा मेहरोमाह का पाया,
गर्दिश से फलक ने ऊज पाया ॥

जैसे वृक्ष सब रुकावटों को काट कर अपनी जड़ें उधर भेज देता है जिधर पानी हो इसी प्रकार एमरीका, जर्मनी, जापान और इंगलैंड के लोग समुद्रों को चीर कर, पहाड़ों को काट कर, द्रव्य को व्यय कर और हर प्रकार के कष्ट सहन कर वहां वहां पहुंचे जहां से थोड़ी बहुत चाहे किसी प्रकार की भी विद्या मिली। यह एक कारण है उन देशों की उन्नति का। अब और सुनिये:—

वली दान—एक जापानी जहाज़ में कुछ हिंदुस्तानी लड़के चढ़े हुए थे जहाज़ में इस दर्जा के यात्रियों को जो भोजन मिला वह विशेष कारण से उन्हों ने न लिया एक दीन जापानी लड़के ने देखा कि यह हिंदुस्तानी भूखे हैं वह सब के लिये दूध फल इत्यादि मोल लेकर लाया और उनके साह्मने रख दिया, हिंदुस्तानीयों ने पहिले तो स्वभाव अनुकूल अस्वीकार किया परन्तु पश्चात् खा लिया जब जहाज़ से उतरने लगे तो धन्यवाद सहित इन वस्तुओं का मुल्य उस जापानी लड़के को देने लगे परन्तु उस ने न लिया और रोकर कहने लगा कि "जब हिंदुस्तान में जाओगे तो कहीं यह बात न फैला देना कि जापानी लोग ऐसे

असभ्य है कि इन के जहाज़ों पर निचले दर्जों के यात्रियों के लिये खान पान का यथेच्छा प्रबन्ध नहीं है" तनिक ध्यान दीजियेगा कि एक दीन यात्री लड़का जिस का जहाज़ के साथ कोई सम्बन्ध नहीं वह अपने निज के पैसे अर्पण कर रहा है कि कहीं कोई उस के देश के जहाज़ों को भी बुरा न कहदे, यह लड़का अपने तईं देश से पृथक नहीं मानता सारे देश को अपना जान रहा है कैसा प्रेम है! कैसा अपूर्व बलिदान है, यह है असली ब्रह्मत्व, नकद धर्म, इस असली अद्वैत के बिना कोई उपाय उन्नति का नहीं है।

मरना भला है उसका जो अपने लिये जिये।

जीता है वह जो मर चुका इन्सान के लिये॥

आप को स्मरण होगा कि जापान में जब अवश्यक्ता हुई कि रूसीयों के आक्रमण को रोकने के लिये कुछ जहाज़ समुद्र में डबो दिये जावें तो मेकाडो ने कहा कि मैं प्रजा में से किसी पर बलात्कार नहीं करता परन्तु जिन को ऐसे जहाज़ों के साथ डूबना स्वीकार है अपनी इच्छा प्रकट करें और प्रार्थना पत्र लिख कर दें। सहस्रों प्रार्थना पत्र आवश्यक्ता से

अधिक एक क्षण में आगये परन्तु अब इन में से चुनाव की कठनाई हुई तिस पर जापानी युवकों ने अपने शरीरों से रक्त निकाल उस से प्राथना पत्र लिख सन्मुख रक्खे कि शीघ्र स्वीकार हों अंतम रक्त से लिखे प्रार्थना पत्रों को अच्छा जान कर स्वीकार किया गया जब जहाजों के साथ यह लोग डूब रहे थे तो दो एक कप्तान यदि चाहते तो अपने प्राण बचा सकते थे, किसी ने कहा कप्तान साहिब आप काम तो कर चुके अब प्राण बचा कर चले जाओ तो मृत्यु की हंसी उड़ाते हुय कप्तान साहिब ने घृणा से उत्तर दिया, "क्या मैंने लौट जाने के लिये यहां आने का प्रार्थना पत्र दिया था" ?

यद्गत्वान निवर्तन्तेतद्धाम परं ममम्। वीरता का दर्जा वह नहीं है कि वापिस लौटा जावेगा पानी में जाते समय सिंह सीधा तैरता है। यह है नकद धर्म अमली वेदांतः—

नैनं छिदंती शस्त्राणि।

नैनं दहति पावकः॥

मुझ को कोट कहां है वह तलवार।

दाग़ दे मुझ को है कहां वह नार ॥
ग़रक मुझ को करे कहां वह पानी।
हवा में ताव कव सुखाने की ॥
मौत को मौत न आजाएगी।
कसद मेरा जो करके आएगी ॥

एमरीका में विद्या सम्बन्धी अन्वेषण (खोज) के लिये जीवत मनुष्यों के चीरने की आवश्का हुई कई युवक अपनी छातीआं खोल कर खड़े होगये कि लो चीरो! "हमें काटो! ईश्वर करके हमारी जान जाय, हमारा जीवत चीरा जाना शुभ २ हो यदि इस से विद्या की उन्नति हो और दूसरों का भला हो" अव इस को हम प्रेम कहें कि वीरता, यह है नकद धर्म असली अद्वैत ॥

युनाईटिड स्टेटस एमरीका के प्रधान इवराहीम लिंकन का वर्णन ह कि वह एक वार अपने ग्रह से दरवार को आरहा था रास्ता में क्या देखता है कि एक शूकर दलदल में फंसा हुआ वहुत दुःखी होकर निकलने की चेष्टा कर रहा है परन्तु निकल नहीं सकता और पीड़ा से चिल्ला रहा है, प्रधान से देखा न गया, स्वारी से उतर कर शूकर को वाहर निकाला और उस के

प्राण बचाये, सारे वस्त्रों पर कीच के छींटे पड़ गये परंतु परवाह न की और इसी दशा में दर्बार में आया लोगों ने पूछा सब वृत्तांत जानने पर सब ने बड़ी प्रशंसा करते हुये कहा कि आप बड़े दयावान और कृपालु हैं, प्रधान ने कहा बस बस ! अधिक मत बोलो, मैंने कोई कृपा नहीं की, छूत के रोग के समान इस शूकर की पीड़ा ने मुझ में अपना असर किया बस मैं तो केवल अपनी पीड़ा हटाने के लिये उस शूकर को निकालने को गया था आहा ! कैसा महान प्रेम है, कैसी अद्वतीय सहानूभूती है ॥

जीवत धर्म (नकद धर्म) का सार यह है कि तुम सारे देश को अपना आत्मा देखो यह धर्म जिन देशों में है वह उन्नति कर रहे हैं जिन जातियों में यह नहीं वह गिर रही हैं, अपने देश के विषय में अब एक बात बड़े दुःख से कहनी पड़ेगी, इन दिनों हांग कांग में सिक्खों की एक सेना है इस से पहिले पठानों की सेना थी हांग कांग में सिक्खों को शायद एक पौंड (१५ रुपये) वेतन मिलता है और साधारण सैनक स्पाही को इस से भी न्यून शायद दस रुपये (दो तिहाई पौंड) मासिक वेतन मिलता है। हांग कांग में पठानों को

गोरों के बराबर प्रति पठान तीन २ पौंड (हमें ठीक स्मरण नहीं) मिलता था चीन के युद्ध के अवसर पर जब सिख वहां गये तो पठानों का यह तिगुणे से अधिक वेतन उन को अनुचित जान पड़ा, बृटिश पार-लेमैन्ट के हां प्रार्थना पत्र दिये गये कि पठानों को जो तीन २ पौंड मिलता है, क्यों नहीं हमें आज कल की दो तिहाई पौंड के स्थान में एक पूरा पौंड ही मासिक दिया जाता और हम को इन के स्थान में भरती कर लिया जाता। इन प्रार्थना पत्रों के स्वेदशी और विदेशी गवर्नमिन्ट के हां फिरने घूमने के पश्चात् पठानों से पूछा गया कि क्या तुम लोगों को तीन पौंड के स्थान एक पौंड लेना स्वीकृत है? एक पठान ने भी इस बात को न माना पस पठानों की सारी की सारी सेना हटादी गई सब पठान बेरोज़गार हो गए, भोले सिक्खों ने इतना न देखा कि यह पठान भी हमारे ही देश के हैं, दुःख न हुआ कि इन की आजीविका मारी गई, इन को दया न आई कि अपने भाईयों का गला कट गया, हाय! रशक (ईर्शा) और देशी फूट! यह भूखे मरते पठान भोजन की खोज में एफरीका को गये और शुमाली लैंड

के मुल्ला के साथ होकर इन्हीं सिक्खों से लड़े इस लड़ाई में बिना लड़े उस देश के जल वायु के उन के स्वभाव के विरुद्ध होने के कारण सिक्खों की वह दशा हुई कि हाय ! अधरंग होगये, ग्रीवायें मुड़ गईं, शरीर सूख गये, ज्वर इत्यादि ने निढाल कर दिया, सत्य कहा है जो औरों के मारने की सोचता है वह स्वयं ही मर जाता है जो पुरुष औरों के लिये खाई खोदता है वह स्वयं उस में गिरता है ॥

जापान में एक हिन्दुस्तानी लड़का विद्या पाता था वह एक पुस्तक लाइब्रेरी (पुस्तकालय) से मांग कर ले गया, उस ने उस के सारे लेख को तो अपनी कापी में लिख लिया परन्तु मशीनों (यंत्रों) के चित्र न लिख सका, अब इस बात को न सोच कर कि इस पुस्तक से अन्य लोगों ने भी लाभ उठाना है उस ने झट उस पुस्तक में से वह पृष्ठ जिन पर मशीनों के चित्र थे निकाल लिये यह बात करते हुये उस को इस बात का विचार न आया कि इस से उस का देश कलंकित होगा। पुस्तक पड़ी थी शीघ्र भेद न खुला, कुछ दिन पश्चात् एक जापानी विद्यार्थी उस के कमरे में आया, मेज़ पर वह

फटे हुये पृष्ट पड़े थे उन को देख कर उस ने पुस्तकालय के अधिष्टाता को इस बात की सूचना दी इस पर कानून (नियम) होगया कि आगे के लिये किसी हिन्दुस्तानी लड़के को कोई पुस्तक न दी जावे। डूब मरने का स्थान है एक तो आप ने उस जापानी लड़के की बात सुनी है जो जहाज़ पर हिन्दुस्तानी लोगों के लिये भोजन लाया था और एक इस हिन्दुस्तानी की करतूत देखिये, जापानी अपने निज का सब कुछ देने को तत्पर है कि उस के देश पर धब्बा न आजाये और हिन्दुस्तानी केवल अपना ही भला चाहता है चाहे सारा देश पड़ा कलंकित हो। हाथ यह नहीं कहता कि मैं अकेला या पृथक हूं मेरा लहु और है और सारे शरीर का रक्त और है। इस भेद भाव से यह विचार उत्पन्न होगा कि हाय! कमाऊं तो मैं और पले सारा शरीर। इस स्वार्थ को पूरा करने की हाय के लिये केवल एक ही युक्ति हो सकेगी, वह यह कि जो रोटी शरीर के लिये कमाई है, मूंह में डालने के स्थान हाथ इस को अपनी हथेली पर बांध ले या नखों में घुसेड़ ले पर क्या स्वार्थ की यह नीति लाभ दायक होगी? एक और

युक्ती भी है वह यह कि मधु मखी अथवा भिड़ से "हाथ" अपनी उंगलियां डसवाले इस प्रकार सारे शरीर को छोड़ कर अकेला हाथ बहुत मोटा होजायेगा परन्तु यह मोटापन तो सूजन है, रोग है। इसी प्रकार जो लोग जाति का भला अपना भला नहीं समझते अपने आत्मा को जाति के आत्मा से भिन्न मानते हैं ऐसे स्वार्थियों को सूजन रोग के अतिरिक्त और कुच्छ हाथ नहीं आता, वही बलवान और पुष्ट होगा जो कान, नाक, आंख पैर आदि सारे शरीर के आत्मा को अपनी आत्मा मान कर अमल करता है और पुरुष वही फले फूलेगा जो सारी जाति की जान को अपनी जान मानता है ॥

एमरीका का और वृत्तांत

एमरीका में सब से पहिली आश्चर्य जनक बात यह देखी गई कि एक ओर पति तो परोटैस्टैन्ट था और पत्नी रोमन कैथालिक। दिल में विचार आया कि धर्मों में इस प्रकार विरोध रखने वाले लोग हमारे हिंद में तो एक मोहल्ला में कठिनता से काटते हैं इस

पति पत्नी की एक घर में कैसे गुज़रती होगी ? पूछने पर ज्ञात हुआ कि वह दोनों बड़े प्रेम से रहते सहते हैं, रविवार के दिन पति पहिले स्त्री को इस के कैथलिक मन्दिर में उस के साथ जाकर छोड़ आता है तत्पश्चात् स्वयं अपने दूसरे मन्दिर में जाता है। पति से बात चीत हुई तो वह कहने लगा के धर्म कि विषय में वह स्वतंत्र है मुझ को उस से इस विषय में कोई सम्बन्ध नहीं मैं कौन हुं जो इस में हस्ताक्षेप करूं॥ वाह वाह !

एमरीका में देशी ऐकता के सन्मुख धार्मिक विभिन्नता की कुच्छ समानता नहीं, हिंदुस्तान का आर्य समाजी हो, सिख हो, मुसलमान हो, ईसाई हो, एमरीका में हिंदु ही कहलाता है उन के दिलों में देशी ऐक्यता इतनी समा रही है कि वह हमारे यहां के इतने भारी धार्मिक भेदों को दृष्टिच्युत करते तनक समय नहीं लगाते॥

उस देश के उत्कृष्ट होने का एक यह भी कारण है कि वहां ब्रह्मचर्य है वह अपने मनुष्यत्व का नाश नहीं होने देते प्रायः वीस वर्ष की आयु तक तो लड़के

लड़कियों को विचार भी नहीं आता कि विवाह क्या वस्तु है ? गूढ़ दृष्टि डालने से इस का एक कारण यह जान पड़ा है कि लड़के लड़कियां बचपन से इकट्ठे खेलते कूदते, एक छत के नीचे लिखते पढ़ते और साथ साथ रहते सहते हैं और पुनः साथ २ ही कालिज में शिक्षा पाते हैं इस कारण आपस में भाई बहिन का सा सम्बन्ध बना रहता है और उनके मन पवित्रता और शुद्धताई से भरे रहते हैं वहां लड़के लड़की का बल एक समान होता है इसी कारण तरुणवस्था में इन की सन्तान भी बलिष्ट होती है,यदि पुरुष बलवान हो और स्त्री निर्बल हो तो इस का प्रभाव आधा आधा सन्तान पर होगा ॥

एक बार जनेवा झील के तट पर राम रहता था तेरह वर्ष की एक लड़की झील में तैरते २ तीन मील तक चली गई, नाव पीछे २ थी कि डूबने लगे तो सहायता की जावे परंतु कहीं सहायता की आवश्यका न हुई जब लड़कियां ऐसी हैं तो उन की सन्तान क्यों बलवान न होगी और जब शरीर में अरोग्यता है तो दिलों में क्यों न होगी और इन के ब्रह्मचर्य का यह भी एक कारण है कि निर्बलता से पाप होता है अजीर्ण से

अपवित्रता होती है। जठर आरोग्य न हो तो बिना कारण चिंता और सोच लगा रहता है जब स्वास्थ ठीक नहीं तो बात बात में क्रोध आता रहता है। वेद में लिखा है "नायमात्मा बल हीनेन लभ्यः" निर्बल इस आत्मा को नहीं जान सकता। मानो निर्बल की दाल ईश्वर के घर में भी नहीं गलती। जिस के अंदर शारीरक और आत्मक बल नहीं है वह ब्रह्मचर्य को कब दृढ़ रख सकता है और यह भी स्पष्ट है कि ब्रह्मचर्य से शुन्य मनुष्य आत्मक और शारीरक बल से शुन्य हो जाता है॥

एमरीका के कालिजों में बी० ए० ऐम० ए० और डाक्टर औफ फिलासफी (दर्शन शास्त्र) की परीक्षा तक शारीरक शिक्षा साथ साथ दी जाती है, युद्ध सम्बंधी शिक्षा, कृषि शिक्षा, लोहार, बढ़ई और राज का काम बराबर सिखलाया जाता है॥ मनुष्य के अंदर तीन बड़े विभाग हैं एक कर्म इन्द्रिय, दूसरा ज्ञान इन्द्रिय और तीसरा अंतष्करण इन को अंग्रज़ीमें ऐच (H) वाले तीन शब्दों हैंड, हैड और हर्ट से प्रगट कर सकते हैं, ज्ञान इन्द्रियों से बाहिर की विद्या अंदर जाती है और

बाहिर की वस्तु अंदर असर करती है कर्म इन्द्रियाँ (यथा हाथ, पैर) से अंदर की शक्ति बाहिर असर करती है कर्म इन्द्रियें और ज्ञान इन्द्रीयें यदि एक सम बढ़े और उन्नति करें तो अच्छा है, यदि बाहिर से ज्ञान को ठोसते जावें और अंदर के ज्ञान और शक्ती को बाहिर न निकालते रहे तो दशा ऐसी ही होजाती है कि मनुष्य खाता तो रहे परन्तु इस के शरीर से कुछ बाहर न निकल सके। इस का फल यह होगा कि बुद्धि अजीर्ण और आत्मक कबज़ होगी परन्तु यह शिक्षा नहीं है रोग है॥ एमरीका में प्रायः यूनीवर्सिटी की शिक्षा का यह अभिप्राय है कि देश की चीजें काम में लाई जावें अर्थात् पृथ्वी, धातु, वनस्पति आदि और अधिक मुल्य वाली वस्तुओं को बनाना आ जावे। जितने शिल्प सिखाये जाते हैं एसे सिखाये जाते हैं कि जिन से लाभ हो। कोई लड़का निष्फल केमिस्टरी (रसायण विद्या) नहीं पढ़ेगा यदि इस ने रसायण विद्या को बर्ताव में लाने का ढंग या केमीकल इन्जीनियरिंग आदि भी साथ न सीखना हो॥

एक धार्मिक कालिज में राम का व्याख्यान हुआ

औरकालिज के लोगों ने युद्ध सम्बन्धी रीति से व्याख्यान दाता का शुभागमन किया, राम ने पूछा यह क्या? धार्मिक तो कालिज और युद्ध सम्बन्धी शिक्षा, प्रिंसिपल साहिब ने उत्तर दिया कि "धर्म के अर्थ हैं शरीर और शरीरत्व को ईसा के समान सूली पर चढ़ा देना खुदी (स्वत्व) को मिटादेना, प्राणों को देश के लिये हथेली पर उठाये फिरना और यह 'प्राण अर्पण' और सच्ची वीरता सैनिक शिक्षा से ही आती है"॥

अब आप दयालु हृदय और मन की शुद्धी की शिक्षा का उदाहरण सुनिये। एक यूनीवर्सिटी में राम गया जो विद्यार्थियों और अध्यापकों की ही कमाई से चल रही थी वहां विद्यार्थी शुल्क आदि कुछ नहीं देते। अन्य शिक्षा के अतिरिक्त अध्यापकों के आधीन कालिज की भूमी पर या मशीनों पर काम करते हैं अध्यापक गण आविष्कार (ईजाद) करते हैं और करना सिखलाते हैं, कृषी के नये ढंग की और निराली उपज और नवीन कारिगरी की आय से सब व्यय दिये जाते हैं, राम की उपस्थिती में एक कमरे में विद्यार्थियों का परस्पर वितंडावाद हो पड़ा, यह विषय प्रधान के पास आया

उस ने उस कमरे का सब काम बन्द करके ब्यानों बजाना आरम्भ करा दिया, १५ मिन्ट में निर्णय हो गया अर्थात परस्पर सन्धी होगई, वाह! जिन के भीतर शांतरस भरा है बाहर के राग उन के अंदर के प्रेम और शान्ति को उकसाने के लिये अच्छे बहाने होजाते हैं। आहा! कैसा प्रबंध है कि वायु में सतोगुण भर दिया दिलों की खटपट स्वयं जाती रही॥

शफैगो यूनीवर्सिटी के एक अंडर ग्रेजुएट ने राम के दर्शन शास्त्र के व्याख्यानों के नोट लिये और थोड़े दिनों पश्चात् उस ने अपनी ओर से उन को विस्तार दे कर पुस्तकाकार में बना कर यूनीवर्सिटी के भेंट किया इस विद्यार्थी को तत्काल एक श्रेणी ऊपर चढ़ा दिया गया। कालिज के कर्मचारियों ने यह नहीं देखा कि आया इस ने 'मिल और हमिल्टन" की पुस्तकों से अपनी बुद्धि को लैटर बैग बनाया है कि नहीं? निस्संदेह सच्ची शिक्षा का आदर्श यह है कि हम अंदर से कितनी विद्या बाहिर निकाल सकते हैं प्रत्युत यह नहीं कि बाहिर से भीतर कितना डाल चुके हैं?

राम एक बार वहां के शास्ता पर्वतों के वन में

रहता था कुछ सज्जन मित्रने आप उन के साथ बारह वर्ष की एक लड़की भी थी,सब राम के उपदेश को ध्यान पूर्वक सुनते रहे परंतु कुछ काल के लिये लड़की परे जा कर बैठ गई जब लौट कर आई तो उस ने एक लिखा पत्र मेरे सन्मुख रख दिया। यह क्या था ? राम का सारा उपदेश जिसको वह अंग्रेज़ी कविता में वर्णन कर लाई, यह कविता पीछे से वहां के समाचार पत्रों में भी छप गई॥ बच्चों के यह गुण और योग्यताएं उन को स्वतंत्र रखने का फल है॥

मनुष्य बालक हो अथवा वृद्ध हैवान नातक (पशु) कहलाता है इन दो भागों में नुतक तो सवार है और पशुत्व (हैवानीयत) सवारी का घोड़ा। जब हम बच्चों के नुतक को प्रेम से समझा उन से काम नहीं लेते बरन झिड़की और कटुवचन से उन पर राज्य करते हैं तो मानो हैवानीयत (पशुत्व) के घोड़े को लाठी से सवार (नुतक)के रानों तले से निकाल ले जाना चाहते हैं ऐसी दशा में बालक के अंदर वाले को क्रोध क्यों न आए? बच्चों को डांटना केवल पशुत्व से काम लेना है और उनके उस भाग का अपमान करना है जिस

के कारण मनुष्य श्रेष्ठतम कहलाता है बलात्कार कटुवचन कहना उन के अंदर बैठे का अपमान करना है, बिना समझाये या कारण बतलाये बच्चे पर "न" करने की आज्ञा करना कि ऐसा मत करो वैसा मत करो उस को उस काम के करने की प्रेरणा करना है॥ जिस समय ईश्वर ने हज़रत आदम को आज्ञा की कि अमुक वृक्ष का फल मत खाना तो उसी रोक के कारण हज़रत आदम के मन में यह बुरा विचार उत्पन्न हुआ उस स्वर्गीय उद्यान में सहस्रों वृक्ष थे परन्तु जब नियम किया गया कि यह न खाना तो स्वभाविक उस के खाने की इच्छा हुई, बहुत ही आवश्यक विज्ञापनों का समाचार पत्रों का यूं आरम्भ होता है कि " इस को मत पढ़ना" ॥

किसी पुरुष ने एक महात्मा से मंत्र जाप मांगा महात्मा ने मंत्र बतला कर कहा कि तीन माला जपने से मंत्र सिद्ध हो जावेगा परन्तु नियम यह है कि माला जपते समय बंदर का विचार न होना पावे। थोड़े काल के पश्चात् वह पुरुष आकर महात्मा से कहने लगा, हे गुरु जी! बंदर तो मेरे कहीं विचार में कभी न था परन्तु आप के खबरदार करने से अब तो वह मेरा

पीछा भी नहीं छोड़ता. इस प्रकार से शिक्षा देने का ढंग एमरीका में नहीं ॥

एमरीका में बच्चों को शिक्षा किंडर गार्टन के ढंग पर होती है अध्यापक बच्चों के साथ खेलते कूदते गाते नाचते पढ़ाते चले जाते हैं और बच्चे मन लगा कर निपुणता प्राप्त करते जाते हैं यथा यदि लड़कों को जहाज़ सम्बन्धी शिक्षा देनी है तो लकड़ी का बना हुआ जहाज़ हर लड़के के आगे रखा हुआ है और बांस की फांके आदि पास रक्खी हैं जिन से नया जहाज़ बन सके। बच्चों के साथ मिले हुये अध्यापक या अध्यापकायें कहती हैं "हमतो जहाज़ बनायेंगे, हम तो जहाज़ बनायेंगे" बच्चे भी देखा देखी कहने लगते हैं "हम भी जहाज़ बनावेंगे" ए लो सब बैठ गये एक लड़के ने जहाज़ बना दिया वह दूसरा भी कृतार्थ होगया, पुनः तीसरे ने भी अपने काम को पूर्ण कर लिया जिस को तनक अबेर हुई अन्य बच्चों या अध्यापका ने सहायता दी फिर बच्चों ने बड़े उत्साह से अध्यापका से स्वयं प्रश्न करने आरम्भ कर दिये, इस भाग का क्या नाम है? वह भाग क्या कहलाता है? यह क्या है, वह क्या

है ? अध्यापका मस्तूल (नौका पक) आदि सब का नाम बतलाती जाती है । बच्चे जहाज़ सम्बन्धी सब बातें मानो स्वयं ही सीख गये । हमारे यहां लड़के पढ़ते हैं "कील" कील माने (अर्थ) जहाज़ की पेंदी, सिर में कील ठुक गईपरन्तु लड़के को पता तक न लगा कि कील क्या वस्तु है और जहाज क्या होता है । वहां पदार्थ का पाहिले ज्ञान दिया जाता है पद पश्चात् बतलाया जाता है यहां पद (नाम) पाहिले स्मर्ण कराते हैं पदार्थ का चाहे सारी आयु पता नलगे। वहां बच्चे प्रश्न करते रहते हैं (जैसा कि बच्चों का सब जगा स्वभाव है) और अध्यापक का काम है उन को पूरे २ उत्तर देते जाना । यहां इतने बड़े अध्यापकों को लज्जा नहीं आती कि नन्हे नन्हे बच्चों को प्रश्न पूछ पूछ कर चकित कर देते हैं । वह पढ़ना क्या है जिस में आत्मिक रहस्य न हो । यहां अध्यापक को देख कर भय से बच्चों के प्राण जाते हैं वहां बच्चों को जो प्रेम अध्यापकों से है माता पिता से नहीं जो आनन्द उन को शाला में है घर में नहीं वहां शालाओं में फीस नहीं लीजाती और सब पुस्तक बिना दाम दिये जाते हैं ॥

दुकानों की वहां क्या दशा है, शिकागो में राम को एक दुकान पर निमंत्रण दिया गया जिस के फर्श की लम्बाई चौड़ाई एक तिहाई गाज़ीपुर से न्यून न होगी दुकान के नीचे ऊपर पचीस छत्तें थीं जिस छत्त पर जाना चाहो (ऐल्यूवेटर) पंगूड़े झट ले जावेंगे हर एक छत्त में नवीन प्रकार का माल भरा हुआ था, करोड़ों रुपयों के ग्राहक प्रति दिन आते हैं परन्तु दुकान वालों का वर्ताव सब के साथ एक सा है। चाहे लाख रुपये का ग्राहक हो चाहे पांच पैसा का मुल्य एक ही होगा, हर एक वस्तु के ऊपर मुल्य लिखी है इस से कौड़ी न्यून नहीं, कौड़ी अधिक नहीं और प्रसन्नता सब के साथ यहां तक कि जो कुच्छ भी मोल न ले और दस वस्तुओं का दाम ही पूछ २ कर चला जावे उसको भी द्वार तक छोड़ने आते हैं और नियमानुकूल प्रणाम करते हैं इस बड़ी दुकान पर ही नहीं साधारण दुकानों पर भी यही बर्ताव होता है ॥

एमरीका, जापान, इंगलैंड और जर्मनी में पुलीस बहुत सभ्य और प्रजा सेवक और प्रजा रक्षक है प्रजा भितक नहीं। कई उपास्थित जन शायद मन में कह रहे

होंगे कि बस अब बंद करो पेमरीकन लोगों की बहुत शलाघा करली इन के गीत कहां तक गाते जाओगे क्या हम को एमरीकन बनाना चाहते हो, इस विचार वालों को राम कहता है कि "हिंदुस्तानी पेमरीकन बनें! दूर! दूर! दूर! दूर हो विचार जिस के मन में भी आया हो नष्ट हो यह आशा जिस ने कभी की हो, राम का ऐसा विचार कदापि नहीं, न हुआ न होगा, हां कुच्छ बातें उन देशों से लेना हम लोगों के लिये आवश्यक हैं, यदि हम चाहते हैं कि हम बचे रहें यदि हमें हिंदु बने रहना स्वीकृत है तो हम को इन की शिल्प और विद्यायें लेनी होंगी चाहे वह किस मुल्य पर मिलें॥

राम जब पेमरीका में रहा तो सिर पर पगड़ी हिंदुस्तानी थी परन्तु बाज़ारों में बर्फ होने के कारण पाओं में जूता उसी देश का था, लोगों ने कहा कि क्यों जूता भी हिंदुस्तानी नहीं रखते। राम ने उत्तर दिया सिर तो हिंदुस्तानी रखूंगा परन्तु पाओं तुम्हारे ले लूंगा, राम का अभीप्राय तो यह है कि आप हिंदुस्तानी बने रहकर पेमरीका वालों से बढ़ जाओ और यह उन जातियों से घृना करते हुये नहीं हो सकता, आज

बिजली और अंजन, रेल तार आदि ज़मान और मकान आदि (दूरी और समय) मानो हड़प गये हैं, भूमंडल एक छोटा सा टापु बन गया है, समुद्र रोक होने के स्थान खुला रास्ता बन गया है जिन को कभी पृथक देश गिनते थे वह शहर हो गये हैं और अलग शहर मानो गलियां हो रही हैं आज यदि हम अपने तईं अलग थलग रखना चाहेंऔर अन्य जातियों से पृथक मान कर अपनी ही अढ़हाई चावल की खिचड़ी पकायें, आज बीसवीं शताब्दी में यदि हम मसीह से पहिले की बीसवीं शताब्दी की रीति और रिवाज बरतें, आज यदि हम परधर्मी शिल्पकारीयों का मुकाबला (तुलना) करना न सीखें, आज यदि हम उधार धर्मों की लड़ाई झगड़े छोड़ कर नकद धर्म को न बरतें तो हम इस प्रकार से उड़ते हैं जिस प्रकार बिजली और इंजन से समय और दूरी। अपनी दशा को पहचानो ॥

कंचन होवे कीच में विष में अमृत हो ॥
विद्या, नारी नीच में तीनों काज सो ।

जब हिंदुस्तान में उन्नति थी तो अपने आप को कूएं का मेंडक नहीं बना रक्खा था जब पुष्कर में

श हुआ तो हवशी, चीनी, ईरानी जातियों के लोगों को निमन्त्रण दिया गया था, राजसूय यज्ञ के पहिले भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव पांडव दूर दूर देशों में गये स्वयं रामचन्द्र जी मर्य्यादा पुरुशोत्तम अवतार ने समुद्र पार जाने की मर्यादा बांधी ॥

उन दिनों तो हिन्दुस्तान किसी अन्य देश का मोहताज (निर्भर) भी न था परंतु आज उस को अन्य देशों के शिल्प सीखने की आवश्यका है क्युंकि इन के विना प्राण जाते हैं वस यदि आज हिंदुस्तान जीवन चाहता है तो एमरीका, यूरुप, जापान आदि बाहिर के देशों से अपने तंई पृथक न रक्खे, वाहिर की वायु लगने से प्राण में प्राण आवेंगे । हिंदु बाहर जावेंगे तो सच्चे हिंदु बन जावेंगे, बाहर जाने से अपने शास्त्र का महत्व जान पड़ेगा और शास्त्र व्यवहार में आने लगेगा, तुम अपने तंई नहीं त्यागी बना सकते अन्य देशियों से जितना भागोगे उतना ही उन के दास बन कर रहना पड़ेगा ॥

इच्छा शक्ती—पुराणों में सुना करते थे और पढ़ा करते थे कि अमुक ऋषि के वर अथवा श्राप से

अमुक की दशा परिवर्तन हो गई, यथा योग वासिष्ट में पत्थर में सृष्टी दिखाने का वर्णन आता है परन्तु एमरीका में इस प्रकार की घटनायें इस समय दृष्टी गोचर हुईं, यूनीवर्सिटी और हस्पतालों के मकानों में इस प्रकार के तजुरबे किये जाते हैं, सहस्त्रों रोगी केवल इच्छा शक्ती द्वारा अच्छे किये जाते हैं, परोफैसर की प्रेरता से मेज़ का घोड़ा छूट पड़ना, जेमज़ साहिब का डाक्टर परस्त हो जाना, पुराने जेमज़पन का उड़जाना अपनी आंखों देखा ॥

अद्वैत—संस्कृत में वेदांत के बहुत से मस्ताना पुस्तक हैं दत्तात्रे की अवधूतगीता, अष्टावक्र शंकाचार्य के स्तोत्र या कुच्छ भाग योग वाशिष्ट के, फारसी में सब से बढ़ कर अद्वैत की वाणी शम्स तबरेज़ की है इस से उतर कर मसनवी शरीफ शेख़ अत्तार पश्चमी आदि परन्तु एमरीका में वाल्ट वहृमटन के पत्र गयाह अद्वैत की वही मस्ती और स्वतंत्रता लाते हैं जो अवधूत गीता अष्टावक्र, शंकाचार्य के स्तोत्र, शम्स तबरेज़ और बुल्ला शाह की वाणी वरन उन से भी कहीं बढ़ कर ॥

डर कर खड़ा हुं खौफ से खाली जहान में ।

तस्कीन दिल भरी है मेरे दिल में जान में ॥
सूबे ज़मान मकान हैं मेरे पैर में मिसले [१]सग।
आ सकता मैं नहीं हूं नाम ओ निशान में ॥

हबशी दासत्व को मुक्त करने के लिये अमरीका के गृह-युद्ध के दिनों में वाह्ट्मिटन हर लड़ाई में सब से आगे विद्यमान रहता था दोनों ओर के घायलों को मरहम पट्टी करना, प्यासों को पानी पिलाना, सिसकते प्राणियों को हंस २ कर ढारस देना और अपने नये बनाये हुये रागों को गाते फिरना इस की दिल लगी का काम था, युद्ध के इस भयभीत और शक जनक समय में वाह्ट्मिटन ऐसा प्रसन्न और दृढ़ चित फिरता था जैसे शिव शंकर भूत प्रेत के समसान में था जैसे श्री कृष्ण भगवान् कुरुक्षेत्र के मैदान (रणभूमि) में फिरते थे। धन्य थे वह प्राण त्यागते हुये योधा जिन्हों ने ऐसे उद्धारकों के दर्शन करते हुये प्राण त्यागे ॥

शब हो हवा हो धूप हो तूफ़ान हो छेड़ छाड़।
जंगल के पेड़ सब इन्हें लाते हैं ध्यान में ॥
गर्दश से रोज़गार की हिलजाय जिसका दिल।

---

[१] समान [२] कुत्ता

इन्सान होके कम है दरख्तों से शान में ॥

इस प्रकार का ब्रह्म निष्ठ एमरीका में हैनरी थोरो भी हुआ है, जो सच्चे ब्रह्मचारी या सन्यासी का जीवन अकेला वनों में व्यतीत करता था, वह आलस्य मय साधु न था। एमरीका का सब से बड़ा ग्रन्थकार एमर्सन थोरो के विषय में लिखता है कि मधू मक्खी के भिड़ उस की शैय्या पर उस के साथ सोती हैं परंतु इस निडर प्रेम के पुतले को नहीं डसतीं, जंगल के सांप उस के हाथों और टांगों को चिमट जाते हैं परन्तु वह इन को कंगन और पाज़ेब के समान समझता हुआ इन की परवाह नहीं करता कैसा थाल भूषण है! रास्ता चलते २ एमर्सन ने पूछा कि यहां के प्राचीन वासियों के तीर कहां मिलते हैं तो नियमानुसार झट उत्तर मिला "जहां चाहो" और इतने में झुक कर उसी स्थान से तीर उठा कर दे दिया, अहा! दृष्टी सृष्टी का क्या अमली अभ्यास है ॥

एमर्सन जिस के नवीन ग्रंथों ने नये संसार में प्राण डाल दिये हैं भगवद्गीता और उपनिषदों का न केवल पूर्ण ज्ञाता वरन बड़ा अभ्यासी था इस ने अपने लेखों में कई स्थलों पर उपनिषदों और गीता के प्रमाण दिये

है और इस के समीपी मित्रों से विदित हुआ है कि इस के विचारों पर विशेष कर के गीता और उपनिषदों का प्रभाव था ॥

महात्मा थोरू अपने वाल्डन में लिखता है कि प्रातःकाल में अपने मन और कपाल को भगवद्गीता के पवित्र गंगा जल में स्नान कराता हूं यह वह सम्मानित और जगत विख्यात् दर्शन शास्त्र है कि इस के लेख में आप देवताओं के वर्षों के वर्ष व्यतीत हो गये हैं परन्तु इस के तुल्य ग्रंथ नहीं निकला इस के सन्मुख हमारा आधुनिक काल अपने साहित्य सहित तुच्छ जान पड़ता है इस की महानता हमारे सोच और विचार से इतनी उच्च है कि मुझे कई बार विचार आता है कि शायद यह दर्शन शास्त्र किसी और ही युग में लिखा गया होगा, एक और स्थान पर मिसर के मीनारों का वर्णन करते हुये थोरू लिखता है कि प्राचीन जगत के सारे सन्माकों में भगवद्गीता से अधिक अद्भुत कुच्छ नहीं यही भगवद्गीता और उपनिषदों की शिक्षा अमल में आई हुई अमली वेदांत या नकद धर्म होजाती है इसी को रगों पट्ठों में लाकर

वह लोग उन्नति कर रहे हैं। आप के हां यह अमुल्य नोट (हुंडवी) विद्यमान है पर कागज़ के नोट से चाहे कितना ही अमुल्य हो भूख नहीं उतरती, प्यास नहीं बुझती, शरीर का जाड़ा नहीं हटता, इस हुंडवी को भुना कर नकद् धर्म में बदलना पड़ेगा और वह लोग इस नोट का मुल्य दे सकेंगे आज वहां पर हुंडवी खरी हो सकती है करो खरी॥

जब सीता जी अयोध्या से वन को सिधारीं तो इन के पीछे नगर की शोभा जाती रही, शोक फैल गया प्रजा चिन्तित हो गई, राजा का शरीर छूट गया, रानीयों को रोना पीटना पड़ गया, सिंहासन चौदह वर्ष तक मानो शून्य रहा और जब सीता जी को समुद्र पार से लाने के लिये राम खड़ा होगया तो पत्ती (गरुड़ जटायु) भी सहायता को तत्पर होगये, जंगल के पशु (बन्दर, रीछ आदि) लड़ने मरने के लिये सेवा में उपस्थित होगये। कहते हैं अपनी तुच्छ शक्ती के अनुकूल गिलहरियां भी मूंह में रेत के दाने भर २ कर पुल बांधने के लिये समुद्र में डालने लग गईं, वायु और पानी भी अनुकूल हो गये, पत्थर भी जब समुद्र

में डाले गये तो सीता के लिये अपने स्वभाव को भूल गये और डूबने के स्थान तैरने लगे। अध्यात्म रामायण में सीता से ब्रह्म विद्या का आशय है, हम कहेंगे अमली विद्या नकद धर्म को छोड़ने से हिन्दुस्तान में सब प्रकार का नाश हुआ, क्या २ दुःख नहीं आये, किस किस कष्ट और पीड़ा ने हम को नहीं सताया, सीता समुद्र पार चली गई, अमली ब्रह्म विद्या को समुद्र पार से लाने के लिये खड़े तो हो जाओ और देखो, सकल संसार की शक्तियें आपस में शर्तें बांध बांधकर तुम्हारी सेवा करने को हाथ बांध उपस्थित खड़ी हैं, सब के सब देवता और देवदूत शिर निवा कर खड़े हैं, प्रकृति के नियम सौगंधें खा खा कर तुम्हारी सहायता के लिये कटि बध खड़े हैं अपनी खुदाई में जाओ और फिर देखो होता है कि नहीं ॥

सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा।
हम बुलबुलें हैं इसकी यह बूस्तां हमारा॥
ओ३म्! ओ३म्!! ओ३म्!!!

इंगलिश टीचर

राज्य भाषा का सीखना आवश्यक धर्म है इस से प्रजा को नाना प्रकार के लाभ होते हैं और फिर अंग्रेज़ी जैसी राज भाषा को जिस के गुण इतने हैं कि वर्णन नहीं हो सकते, इस समय भूगोल भर में यदि कोई ऐसी भाषा है जिस के द्वारा एक यात्री भिन्न २ बोलियों के रखने वाले देशों में सैर कर सकता है तो यही भाषा है भूगोल का कोई ऐसा देश नहीं जिस में अंग्रेज़ी भाषा न बोली जाती हो, यह इस भाषा का कोई थोड़ा गुण नहीं, तृतीय इस भाषा में आय दिन हर एक विषय के उत्तम २ पुस्तक त्यार हो कर छप रहे हैं। जिन से इस भाषा के जानने वाले बहुत लाभ उठा सकते हैं, सार यह है कि इस के बहुत लाभ हैं इन्हीं लाभों को दृष्टी में रख कर हम ने इंगलिशटीचर नामी पुस्तक अंग्रेज़ी और हिन्दी में भी छाप दी है इस पुस्तक के द्वारा एक ऐसा जन जो थोड़ी सी हिन्दी अर्थात देवनागरी जानता हो किसी की सहायता के विना स्वयं ही घर बैठे अंग्रेज़ी भाषा सीख सकता है।

ढंग बहुत सुगम रक्खा गया है, व्याकरण के पाठ साथ २ दिये गये हैं जिन के द्वारा सीखने वाला स्वयं ही छोटे २ शुद्ध वाक्य बना सकता है, सारी पुस्तक के पढ़ लेने पर अंग्रेज़ी बोल सकता है और पत्र इत्यादि भी लिख सकता है पंजाब के बड़े २ समाचार पत्रों ने इस पर बहुत उत्तम समालोचनी की है॥

हम इस बात के प्रकट करने का साहस करते हैं कि यदि हमारी यह पुस्तक ग्राहक को अंग्रजी भाषा न सिखलावे तो हम इस का दाम फेर देंगे मुल्य सजिल्द ... ... १)

घर का दर्जी-हर प्रकार के कपड़ों की काट का ढंग चित्र देकर बतलाया गया है एक अनजान जन घर बैठे इस पुस्तक की सहायता से सब प्रकार के कपड़े सी सकता है मुल्य ।)

दसमहारणीयां और स्त्री धर्म

सीता,, दमयन्ती, कर्म देवी, साविञी, पद्मनी, संयोगता, महारणी जोधपुर, इत्यादि दस महारणीयों के चरित्र और स्त्री धर्म मुल्य ... ... ।)

सन्तान रत्न-बालक पन की सिक्षा, विवाह का समय, गर्भ के चिन्ह, गर्भ रक्षा के लिये हिदायतें, प्रसूत स्थान, दाई, प्रसूत समय और उस की आवश्यक वस्तुयें, बालक जनाने के समय की त्रुटीयां, बच्चे के पालने के नियम, बच्चों के रोग और उन की औषधीयां इत्यादि कई लाभदायक बातें हैं जिस गृह में यह पुस्तक होगी बहुत सुख देकर व्यर्थ व्यय और नाना दुःखों से बचायगी मुल्य साजिल्द ... ... ॥)

पत्रमाला-किराया नामा, रसीद, रुक्का, बयनामा, रहननामा, वसीयत इत्यादि हर प्रकार की चिट्ठी आदि लिखना सिखलाने वाली पुस्तक यह पुस्तक मंगवाकर उर्दू के स्थान हर एक प्रकार का कागज़ हिंदी में लिख कर अपनी मातृ भाषा के प्रचार की पुष्टि करो मुल्य ≥)

पता—यह पुस्तकें और हर प्रकार की पुस्तकें

मिलने का—

शिवदास पुस्तकांवाला

लोहारी दरवाज़ा लाहौर ॥